International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 08-01-2024, Accepted: 30-01-2024, Published: 24-02-2024
Volume 10, Issue 1, 2024, Page No. 15-17

भक्ति काव्य में स्त्री–चेतना का स्वरूप

सुधांषु प्रकाष शुक्ल, वन्दना पाण्डेय
हिन्दी विभाग, गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कालेज मुरादाबाद, उत्तर प्रदेष, भारत

सारांश
भक्तिकाल को निःसंदेह हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल कहा जा सकता है। इस काल में उस समय की सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्था सामंती सोच से आबद्ध थी, जिसमें स्त्री अपनी निम्नता के उत्तुंग शिखर पर विराज रही थी। वह केवल रूढ़िवादी सामंतों के हाथ की कठपुतली बन गई थी। मुगलों द्वारा स्त्री की अस्मिता को गहरा आघात पहुँचाया गया। भक्तिकालीन कवियों में तुलसी, सूर, कबीर, जायसी तथा मीराबाई आदि ने अपने काव्य के माध्यम से स्त्री चेतना को जगाने का प्रयास किया ताकि उसका स्तरोन्नयन हो सके व समाज में खोई प्रतिभा प्राप्त कर सके, जिसकी वह वास्तविक अधिकारिणी है।

मूल शब्दः स्वर्णकाल, सामंती व्यवस्था, अस्मिता, कठपुतली, स्तरोन्नयन, प्रतिष्ठा आदि।

भक्तिकाल में मुख्यतः संत कवियों द्वारा समाज का सांस्कृतिक रूप काव्य के रूप में अभिव्यक्त किया गया है, जिसमें इन संतों द्वारा उस समय की सामाजिक व्यवस्थाओं, विरोधाभासों एवं द्वंद्वों के झंझावतों से गुजरते हुए यथार्थ रूप में वर्णन मिलता है। भक्तिकाल में धर्म, दर्शन, कला, संस्कृति सहित मनुष्य भी रूढ़िवादिता की कठपुतली बन गया था। इन रूढ़ियों से मुक्ति हेतु कवियों ने अपनी वाणी के माध्यम से इनका प्रतिकार किया, जिनमें कबीर, तुलसी, जायसी, मीराबाई आदि संतों की वाणी काव्य रूप में परिलक्षित हुई। इन लोगों ने स्त्री को रूढ़िवादी परिस्थितियों की गुलामी से आजाद करने के लिए प्रभावी लेखन के माध्यम से स्त्री चेतना जगाने का अथक प्रयास किया। भक्तिकाल में स्त्री को मात्र भोग्या समझा जाने लगा था और समाज में स्त्री की प्रतिष्ठा धूमिल हो गई थी। मुगलकालीन शासकों द्वारा स्त्री को दोयम दर्जे का नागरिक मानकर उनका शोषण इस हद तक किया गया कि समाज निर्माण का एक मूलाधार स्तम्भ लगभग अस्तित्वविहीन हो गया। मध्यकालीन अत्याचारों से स्त्री अस्मिता कराह उठी व स्वयं के अस्तित्व के लिए संघर्षरत हो गई। इस संघर्ष में स्त्रियों ने हार न मानकर स्वयं का जीवन भी दाँव पर लगाने में कोई कोताही न बरती। इसका उदाहरण मीराबाई का स्वयं का जीवन दर्शन है जो एक राजघराने की वधु एवम् पुत्री होने के बावजूद रूढ़िवादिता की बेड़ियों में स्वयं को जकड़ा पाती थीं। उन्होंने अपने स्वत्व को पहचान अपनी वाणी के माध्यम से स्त्री चेतना जगाने का प्रयास किया और स्वयं को एक पथप्रदर्शिका की भाँति स्थापित किया।

कबीर के काव्य में स्त्री अभिव्यक्ति

कबीरदास जी के समय में मुगल शासन था, जिसमें स्त्री को मात्र भोग विलास की वस्तु माना जाने लगा। तत्कालीन सामाजिक लोग भी स्त्री प्रसंग में लीन रहने लगे तथा धर्म से विमुख होने लगे। यह सब संत हृदय कबीर को अच्छा न लगा तथा उन्होंने स्त्री को माया रूप में वर्णित किया। कबीर दास ने स्त्री को जहाँ माया का रूप बताकर ईश्वर भक्ति के मार्ग में बाधक बताया वहीं उन्होंने स्त्री को जीवात्मा रूप में भी देखा था। आत्मा को पत्नी तथा परमात्मा को पति रूप में स्थापित किया तथा स्त्री (आत्मा) को अपने पति (परमात्मा) के मिलन की आतुरता (भक्ति) का वर्णन निम्न प्रकार किया–

दुलहनी गावहु मंगलाचार
हम घरि आए हो राजा राम भरतार।।
तनरत करि मैं मन रत करिहौं, पंचतत्त बराती।।
रामदेव मोरे पाहुने आए, मैं जीवन में माती।।
सरीर सरोवर बेदी करिहबमा, वेव प्रचार।।
रामदेव संगि भौवरी हूँ, धनि धनि भाग हमार।।
सुरतेंतीसूकौतिन आये मुनिवर सहस अत्यासी।।
कहै कबीर हम ब्याहि चले हैं, पुरिस एक अविनासी।।[1]

कबीर नारी के सती रूप को अपने काव्य में उच्च स्थान प्रदान करते हैं। कबीर ने नारी के पतिव्रता रूप को उपास्य कहा है।

पतिबरता मैली भली, काली कुचिल कुरूप।।
पतिबरता के रूप पर बारौं कोटि सरूप।।[2]

इस प्रकार कबीर दास अपने काव्य के माध्यम से नारी के पतिव्रता धर्म को उपास्य मानते हैं तथा सामाजिक कुरीतियों का प्रतिकार कर उसे सम्मानित दृष्टि प्रदान करते हैं।

तुलसी के काव्य में स्त्री अभिव्यक्ति

इतिहास में नारी लगातार तिरस्कृत होती रही, कभी पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण तो कभी सामंती परिवेश के कारण। भक्ति काल में नारी अस्मिता का उभार हुआ। इस काल में नारी अस्मिता को केंद्र में रखकर प्रगतिशील चिंतन आरम्भ हुआ, जो आगे चलकर आधुनिक नारी के रूप में प्रतिबिंबित हुआ। तुलसी साहित्य में नारी की आलोचना सामाजिक ढाँचे को व्यवस्थित रूप प्रदान करने के लिए की गई है, जबकि वह स्वयं नारी को प्रेम तथा पूर्णता की दृष्टि से व्यक्त करते हैं। वह स्त्री को उपदेशिका तथा उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षिका का पद भी प्रदान करते हैं। उनके काव्य में माता अनुसूया माता सीता को उच्च स्तर की शिक्षा प्रदान करते हुए कहती हैं–

एकइ धर्म एक ब्रत नेमा।।
कायँ बचन मन पति पद प्रेमा।।[3]

वह स्त्री को पुरुष से भिन्न न मान कर उसका पूरक मानती हैं तथा पतिव्रता स्त्री को ही अच्छी सामाजिक पथ प्रदर्शक मानती हैं। वह स्त्री का श्रेणीगत वर्गीकरण भी करती हैं–

जग पतिब्रता चारि बिधि अहहीं।।

बेद पुरान संत सब कहहीं।।
उत्तम के अस बस मन माहीं।।
सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं।।
मध्यम परपति देखइ कैसें।।
भ्राता पिता पुत्र निज जैसे।।
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई।।
सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई।।
बिनु अवसर भय तें रह जोई।।
जानेहु अधम नारि जग सोई।।[4]

माता अनुसूया पुनः स्त्रियोचित शिक्षा देते हुए कहती हैं–

पति बंचक परपति रति करई।।
रौरव नरक कल्प सत परई।।[5]

उक्त शिक्षा सामाजिक ढाँचे का मूलाधार है। इसके अभाव में सामाजिक व्यवस्था नष्ट–भ्रष्ट हो जाएगी तथा मानव सभ्यता अपना अस्तित्व खो देगी। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि तुलसी की स्त्री चेतना आदिकाल से अनादि काल तक प्रासंगिक रहेगी तथा मानव सभ्यता को स्वस्थ दिशा देती रहेगी। तुलसी काव्य में नारी को सुरक्षा एवं सामाजिक उत्थान के लिए अति आवश्यक माना गया। इस संदर्भ में पतिव्रता मंदोदरी दूरदर्शिका हैं यथा–

मंदोदरी हृदयकरि चिंता।
भयउ कंत पर विधि विपरीता।।[6]

वह भविष्यवक्ता के रूप में कहती हैं–

जासु दूत बल बरनि न जाई।।
तेहि आए पुर कवनि भलाई।।[7]

तुलसी मंदोदरी को शील गुणों से युक्त विनम्रता, बुद्धिमत्ता, कुशल राजनीतिज्ञा तथा नीतिवान बताते हुए लिखते हैं–

रहसि जोरि कर पति पद लागी।।
बोली बचन नीति रस पागी।।
कंत करष हरि सन परिहरहू।।
मोर कहा अति हित हिय धरहू।।[8]

इसके पश्चात् तुलसी मंदोदरी के चेतावनी भरे शब्दों को व्यक्त करते हैं। वह कहती हैं–

समुझत जासु दूत कइ करनी।
स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी।।[9]

तुलसीदास मंदोदरी को मानवता की रक्षिका तथा लोक कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाली बताते हुए कहते हैं–

तासु नारि निज सचिव बोलाई।
पठवहु कंत जो चहहु भलाई ।।
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई।
सीता सीत निसा सम आई।।[10]

मंदोदरी संधि का मार्ग भी प्रशस्त करती हैं एवं कुशल राजनीतिज्ञा की तरह कहती हैं –

सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें।।
हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें।।[11]

तुलसी की स्त्री चेतना के संबंध में उक्त विचार आधुनिक कल में सामाजिक उथल–पुथल तथा भयंकर मानवीय त्रासदी को रोक कर नैतिक, आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त करने में प्रसांगिक रहेंगे।

मीरा के काव्य में स्त्री अभिव्यक्ति

भक्तिकाल चिंतन की दृष्टि से काव्य साहित्य में अपना उत्कृष्ट योगदान रखता है जो कि स्त्री को भोग विलास की वस्तु के बरख्श सृष्टि सर्जिका के रूप में प्रतिपादित करता है। यह अकाट्य सत्य है कि मानव सभ्यता का उद्भव बिना नारी के असंभव है। अतः नारी को निम्नतर न मान कर पुरुष की पूरिका माना जाना उचित होगा। मध्यकालीन मुगल शासकों द्वारा नारी के अस्तित्व दमन के भरसक कुत्सित प्रयास किए गए। नारी असुरक्षा की भावना ने समाज में पर्दा प्रथा, सती प्रथा, जौहर तथा बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों का सूत्रपात किया, जो कि संपूर्ण स्त्री जाति के लिए उच्चतम अवनमन की पराकाष्ठा के लिए उत्तरदाई बनी। कछवाहा राज कन्या जोधा बाई तथा सिंहलद्वीप की महारानी पद्मिनी इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। जहाँ जोधा अपने परिवार के रक्षार्थ स्वजीवन से समझौता कर मुगलों की कठपुतली बनीं वहीं महारानी पद्मिनी ने धर्म व अस्मिता के रक्षार्थ स्वजीवन को जौहर के द्वारा समाप्त कर खिलजी जैसे आततायी व चरित्रहीन को मुँहतोड़ जवाब देकर प्रतिमान स्थापित कर इतिहास में सदैव के लिए अमरत्व प्राप्त किया। सिसोदिया कुलवधू माता मीराबाई मध्य मार्ग का अनुसरण कर अपने को सुरक्षित रख सती प्रथा जैसी कुप्रथा का प्रतिकार कर देती हैं। जहाँ एक ओर मीराबाई ने राजघराने की मर्यादा को बचाकर स्त्री अभिव्यक्ति को स्वतंत्र स्वर दिया वहीं दूसरी ओर पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विरोध कर मानव जीवन की श्रेष्ठता का सन्देश दिया। इस हेतु उन्होंने स्वयं को पारिवारिक एवं सामाजिक अत्याचारों के समक्ष सक्षम बनाया तथा ईश्वर भक्ति का अप्रतिम मार्ग प्रस्तुत किया। वह कहती हैं–

भजन करस्यां, सती न हास्यां,
मन मोह्यो घणनामी।।[12]

माता मीरा ने स्त्री स्वत्व स्थापन हेतु राजपरिवार द्वारा दी गई यातनाओं का निर्भय होकर साहस पूर्वक उपचार किया। मीरा ने ईश भक्ति में सांसारिक मर्यादाओं को बखूबी निभाया है तथा स्वयं (स्त्री) को आत्मा के रूप में तथा ईश्वर (गोपाल) को परमात्मा के रूप में व्यक्त किया है जो कि दर्शन का सार तत्व है। वह कहती हैं–

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।।[13]

संसारोत्पत्ति और सर्जना के लिए आत्मा व परमात्मा का मिलन अत्यावश्यक है, जो कि माता मीरा द्वारा सहज ही प्राप्त कर लिया गया। उन्होंने रूढ़िवादिता की जंजीरों से निकलकर सूक्ष्म शरीर को प्राप्त कर प्रभु से एकीकार किया तथा विष का प्याला भी अमृत के समान पानकर अमरत्व को प्राप्त किया। इस प्रकार मीराबाई ने मध्यकाल में स्त्री चेतना को कुरीतियों के विरुद्ध जागृत कर समर्थता, पूर्णता एवं अमरता का संदेश दिया।

सूरदास के काव्य में स्त्री अभिव्यक्ति

भक्ति काल के अधिकतर रचनाकारों ने अपने काव्य में स्त्री चेतना को अपनी विलक्षणता के आधार पर वर्णित किया है, जिसमें उस समय की देशकालीन परिस्थिति महत्वपूर्ण कारक रही है, जिसने भक्त कवियों को आत्म प्रेरणा प्रदान की। मध्यकाल में स्त्री कभी विदेशी आक्रांताओं से त्रस्त तो कभी मुगलकालीन सत्ता से शोषित होकर अपने अस्तित्व को खोजती रही। अधिकतर कवियों ने नारी अस्मिता को बचाने के लिए काव्य का सहारा लिया तथा इसके प्रयोग से सामाजिक जनजागरण का कार्य किया। कुछ कवियों ने अपने काव्य दर्शन में स्त्री को उपास्य तथा देवी की संज्ञा प्रदान की है तो कुछ ने स्त्री तथा पुरुष को एक दूसरे का अभिन्न अंग माना है। सूर ने अपने काव्य में स्त्री तथा पुरुष को सृष्टि के दो स्वतंत्र चर माना है, जिसमें दोनों ही समान रूप से एकाकार होने के लिए आतुर रहते हैं। महाकवि सूरदास अपने काव्य सूरसागर में स्त्री चेतना को महानता प्रदान करते हुए कहते हैं कि स्त्री पुरुष की दासी या अनुचरी नहीं है बल्कि वह समभाव में उसकी सखी या सहचरी है तथा पुरुष के प्रत्येक कार्य में सहभागी है। यथा–

छिटकति सखी कुमकुमा केसर, भुरकति बंदन धूरि।।
सोभित है तनु सांझ–समै–घन, आए हैं मनु पूरि।।
दसहुं दिसा भयौ परिपूरन, सूर प्रसंग प्रमोद।।
सुर विमान कौतूहल भूले, निरखत स्याम विनोद।।[14]

सूर दास जी नारी को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करते हुए लौकिकता से दूर अलौकिक संसार का बड़ी महानता से वर्णन करते हैं, जिसमें गोपीकाएं लौकिक मर्यादाओं को छोड़कर मध्य रात्रि में अलौकिक संसार में प्रवेश करती हैं जहाँ आत्मा का परमात्मा से मिलन प्रतिबिंबित होता है जिसमें लौकिक परंपरा का किंचित मात्र भी विदलन नहीं होता है।

निष्कर्ष

भक्तिकालीन काव्य में विभिन्न कवियों द्वारा उस समय की परिस्थितियों के अनुसार काव्य रचना के द्वारा जन जागरण किया गया। उस समय व्याप्त अत्याचारों तथा सामंती सोच से स्वत्व की रक्षा के लिए भक्त कवियों तुलसी, सूर, मीरा, कबीर आदि के द्वारा काव्य रचना के माध्यम से योगदान दिया गया। साथ ही क्षीण होते मानवीय मूल्यों तथा धूमिल होते धार्मिक परिदृश्य के उत्थान हेतु नारी चेतना को जागृत किया। कबीर दास ने नारी को उपास्य तथा सूर ने स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में स्थापित किया। वहीं तुलसीदास ने नारी के पतिव्रत धर्म को सामाजिक उन्नयन का माध्यम बताया जबकि मीराबाई ने मध्यकाल में व्याप्त कुप्रथाओं का दृढ़ता पूर्वक प्रतिकार कर स्वयं को सक्षम नारी के रूप में स्थापित करते हुए जीवन की श्रेष्ठता स्थापित की। अतः यह कहा जा सकता है कि भक्त कवियों ने नारी चेतना के उत्थान के लिए जो कार्य किए वह आगे चलकर आधुनिक नारी के रूप में प्रतिबिंबित हुए। यहाँ हम पाते हैं कि भक्ति काव्य नारी चेतना की दृष्टि से अप्रतिम रहा। फलतः आधुनिक नारी अधिक सशक्त और सबल हुई है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. संपादक श्याम सुंदरदास–कबीर ग्रंथावली
2. कबीर– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. रामचरितमानस, 3/5/5 पृष्ठ 625–गोस्वामी तुलसीदास
4. रामचरितमानस, 3/5/6–7 पृष्ठ 626–गोस्वामी तुलसीदास
5. रामचरितमानस, 3/5/8 पृष्ठ 626–गोस्वामी तुलसीदास
6. रामचरितमानस, 5/3/37 पृष्ठ 748–गोस्वामी तुलसीदास
7. रामचरितमानस, 5/2/36 पृष्ठ 747–गोस्वामी तुलसीदास
8. रामचरितमानस, 5/3/36 पृष्ठ 747–गोस्वामी तुलसीदास
9. रामचरितमानस, 5/4/36 पृष्ठ 747–गोस्वामी तुलसीदास
10. रामचरितमानस, 5/5/36 पृष्ठ 747–गोस्वामी तुलसीदास
11. वही पृष्ठ 747
12. मीरा रचनासंचयन– माधव हाड़ा
13. मीरा का काव्य– डॉ. विश्वनाथ तिवारी
14. संपादक डॉ. धीरेंद्र शर्मा– सूरसागर पृष्ठ 123